B.A PT. III DBT Date

Paper No I

Unit

Page 1

M.F. Hussain :-

एम एफ हुसैन का पुरा नाम मकबूल फिदा हुसैन इनका जन्म महाराष्ट्र के सौलापुर के निकट पन्ढर नामक गाँव में 1915 में हुआ था। इनके पिता इंदौर की एक मील में नौकरी करते थे। अत: हुसैन अपने जन्म के कुछ समय बाद ही अपने परिवार के साथ इंदौर आ गये। इनकी माँ मुल्ला परिवार की थी। अत: इनकी ~~शिक्षा~~ शिक्षा धार्मिक शिक्षा दी गई। 6 वर्ष की आयु में धार्मिक पुस्तके पढ़नी शुरू किया परन्तु इनकी रूचि चित्रकला में थी अत: विभिन्न प्रकार के चित्रों को एकत्रित करके उनके चेहरे के स्केच बनाना शुरू कर दीया। यही से चित्रकला की ओर अग्रसर होते चले गए।

हुसैन को फिल्म देखने का बहुत शौक था एक बार होलेण्ड के चित्रकार रेम्ब्रा की फिल्म देखी जिसका इतना प्रभाव पड़ा कि प्रतिदिन 10-20 मुखाकृतिया बनाने लग गये। कक्षा 7-8 पढ़ते-2 कक्षा सात चित्रकार बनने की इच्छा

स्पष्ट रूप से घर वालो को कह दिया। घर में विरोध के बावजूद उन्हे स्वीकृति दे दी गई साथ ही चित्रकला से संम्बन्धित कुछ सामान एक साइकिल और एक कमरा किराये पर दिला दिया। अब हुसेन के इरादे पक्के हो गये और कलम महाविद्यालय में प्रवेश ले लिया उस समय वहा पर इंदौर कला विद्यालय में देव नालिकर जी शिक्षा से दृश्य चित्रण की शिक्षा ली। उसी समय उनके पिताजी इन्दौर मील में अकाउंटेंट की नौकरी छुट गई। परिणाम स्वरूप 1934 में मुम्बई में वापस लौटे।

मुम्बई जाने के पश्चात इन्दौर के ही एक होर्डिंग चित्रकार से मुलाकात हुई। और इनके पास काम करने लगे। खाने में खिचडी और सोने में फुटपाथ मिला। 1936-37 में स्वतंत्र रूप से होर्डिंग का काम करने लगे। और 1941 तक बम्बई के सर्वोत्तम होर्डिंग पेंटर के रूप में प्रसिद्ध हो गए।

प्रथम स्थान पर मिट्टर मिन्के थे। किन्तु हुसैन केवल होडिंग पेंटर से संतुष्ट नहीं थे। उस समय यूरोप में प्रभाव-वादी चित्रों का प्रचलन बढ़ रहा था। जिनके चित्र देखकर ये प्रभावित हुए। उन्होंने उसी समय प्रभाववादी चित्रों की प्रेक्टिस शुरू कर दी साथ ही सुन्दर लिपी लिखने का प्रयास शुरू कर दिया लगभग शाम के समय में पिक्चर देखते थे। और बम्बई की कला गैलरी में चित्रों में प्रदर्शनी अवश्य लेते थे। इस प्रदर्शन में अमृता शेरगिल के चित्र तो अच्छे बनने लगे परन्तु पीकासो के चित्र पसन्द नहीं आये।

1941 में इनका विवाह हो गया। और एक फर्नीचर की दुकान पर डिजाय की नौकरी करने लगे 1946 तक ये कार्य किया इसके पश्चात ये नौकरी छोड़कर स्वतंत्र चित्रांकन करने को निश्चय कर लिया। 1947 में दर्शक चित्रांकन छोड़कर एक ग्रुप का निर्माण किया। जिसकी स्थापना 1948 में Pag.

(पैग) P = Progressive (प्रोग्रेसीव), A = आर्टीस्ट ग्रुप अर्थात् जिसमें सूजा और रजा भी सम्मलित थे कुछ समय पश्चात् हुसैन सूजा के साथ दिल्ली आये यहा चित्रकला और मूर्ति कला की प्रदर्शनी देखी जिससे वे प्रभावित हुए। और मुम्बई आकर गुप्त-कालीन लावण्यमयी नारी शैली के ओज पूर्ण चटकीले रंग तथा लोक तत्वो का प्रयोग करके पाँच चित्र बनाये। यहीं से उनको बंगाली शैली तथा पश्चमी शैली से मुक्ती मिली। इसके साथ ही कला जीवन का एक अध्याय शुरु हो गया।

1950 में उन्होन अपने चित्रो की प्रथम एकल प्रदर्शनी की में यूरोप भ्रमण पर गए। और 1953 ई वी. में 1954 ललित कला अकादमी द्वारा प्रख्यात चित्रकार के रूप में मनोनित किये गये। उसके वर्ष पश्चात ही 1955 की प्रदर्शनी में केन्द्रीय ललित कला अकादमी नई दिल्ली द्वारा प्रथम राष्ट्रीय

पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके पश्चात उनके चित्रों की प्रदर्शनीयाँ ज्यूरिके प्राग, टोक्यो, फ्रेंकफर्ट, रोम न्यूयोर्क आदि में आयोजित हुई। 1971 में ब्राज़िल के साओ पाओलो में उनके चित्र पिकासु के चित्रो में प्रदर्शित किये गए। 1968 में "थ्रुव दा आइज ऑफ ए पेन्टर" नामक लघु फिल्म प्रदर्शित किये। जिसे बर्लिन महोत्सव में "गोल्डन बियर" पुरस्कार मिला। 1982 में उनके चित्र टेट गैलरी में प्रदर्शित हुए। भारत सरकार ने पद्मश्री तथा पद्मभूषण से सम्मानित किया।

M F हुसैन की चित्र शैली :-

मूलतः तौर पर हुसैन एक प्रतिकवादी चित्रकार हैं। उनकी मानव आकृतियों में विशेष प्रकार के विकृति उत्पन्न कि गई है। इसमें वे पाश्चिम देशों से प्रभावित हुये। 1948 के आसपास वे प्रति अर्थात्वादी चित्रकार रहे। फिर-फिर घनवादी चित्रकार बन गये।

वे आकृति को सरल एवं व्यंग्य बनाने के लिए भी विकृति पैदा करते थे जिसमें कम - से कम प्रयत्न करने में श्रेष्ठतम प्रभाव उत्पन्न करने की कोशिश करते थे। रंगों के चौड़े तथा बड़े पुंजों का प्रभाव प्रयोग भावनाओं को प्रतीक विधि में व्यक्त करने के लिए करते हैं। सरल मानवाकृतियाँ तथा चटक रंगों का प्रयोग लघु चित्रों की प्रेरणा से हुआ। हुसैन का अभिव्यंजना-वाद पश्चिमी देशों के अभिव्यंजनावाद से भिन्न है इनकी आकृतियाँ कुछ अस्पष्ट लगती है। रूपाकारों का निर्माण रेखा व रंग का महत्व को ध्यान में रखते हुए किया गया। यहां रेखाएं बारीक हैं। वहां रंग भी हल्के बलों में पारदर्शि प्रभाव उत्पन्न करते हैं। छाया प्रभाव की बजाय विरोधी रंगों के जोड़े बड़े - बड़े धब्बे लगाकर आकृतियों में ही दृढ़ता उत्पन्न की गई है। और एक

ओजपूर्ण शैली का निर्माण किया गया है। रंगों को तूलिका (ब्रुश) या चाकू से किया गया। हुसैन ने अधिकांश चित्र तैल रंग में बनाया है।

हुसैन के सम्पूर्ण जीवन का प्राथमिक प्रतीक नारी रही है जो अनेक प्रकार से पीड़ा सहती है। वह पीड़ा वेदना, घुटन का प्रतीक उसमें असीम करुणा तथा प्रेम है। जीवन के अन्त में अंधकार पूर्ण पक्षियों के प्रति केकटस, मकड़ी, ट्रीशन तथा पीड़ा से कराता हुआ अश्व है। अश्व अपनी विभिन्न मनोस्थित एवं गति का प्रतीक है। सर्प तथा नारी की जंघा पर बैठा गिद्ध काला चन्द्रमा तथा दौड़ते अश्व के साथ जमीन पर लुढ़कता हुआ आदमी सूर्य उसके अन्य प्रतीक हुआ हैं।

हुसैन ने कुछ सुन्दर पोट्रेट तथा दृश्य चित्र भी बनाये। गुजरात के पश्चात राजस्थान बनारस केरल

कलकत्ता, बंगाल उनके पसन्दीदा राज्यों में से क्रमशः हैं। उन्होंने इन स्थानों पर दृश्य चित्रों के अतिरिक्त यहाँ के जन-जीवन, उत्सवों तथा नगरों की भीड़भाड़ के चित्र अंकित किये हैं। इसके अतिरिक्त प्रसंग में नरनारी कुछ अवस्थाएं संगीत के राग पक्षी, हाथी, तथा विचित्र आकृतियाँ भी उन्होंने बड़ी संख्या में चित्रांकित किये हैं। वे स्वयं जीवन को अपना सबसे अच्छा चित्र मानते हैं। उनके नये विषय मदर टेरेसा, ताण्डव करते हुए रावण, गणेश, अकेली सीता, हिंसा का प्रतीक, अमिताभ बच्चन, फूलन देवी, दुर्गा, श्वेत कैनवास पर ~~लिख~~ बिखरे हुए अक्षर, ~~दिन-दिन~~ दिग्भ्रमित, उड़ते शान्ति कपोत, माधुरी दीक्षित उनकी श्रेष्ठ कलाकृतियों में से एक हैं ~~वे~~

ये फिल्म निर्माण का काम, फोटोग्राफी भी किया करते थे। कभी कभार अंग्रेजी में कविता भी लिखते थे। 1993 में प्रयोग के

तौर पर एक ऐसा कैनवास बनाया जो इतना बड़ा था कि हुसैन साहित कलाकारों ने एक ही कैनवास पर 40 काम किया जो विश्व की सबसे बड़ी घटना थी।

M. F. Hussin की व्यक्तिगत जीवन शैली: एम एफ हुसैन

उनके तीन पुत्र व दो पुत्रीया है पुत्रों का नाम मुस्तफा, शमशाद औवेस है तथा पुत्रीयाँ, रईसा, अकीला।

M.F हुसैन 1986 में राज्य सभा के सांसद चुने गए। 1991 में पद्मभूषण का पुरस्कार (चित्रकार) के लिए भारत सरकार द्वारा दिया गया। 1996 ई वी. हिन्दू देवी, देवताओं के न्यूड पेन्टिंग बनाई जिससे हिन्दु समाज में काफी विरोध पैदा हुए। सन् 2000 में गजगामीनी फिल्म का निर्माण किया गया। जिसे भारत के सिनेमा घरों से उतरवा दी गई। अन्त में इस फिल्म

को कांश फिल्म फैस्टीवल में प्रदर्शित किया। और पुरस्कृत भी हुई। 2004 में अभिनेत्री तब्बू के साथ एक फिल्म का निर्माण किया। जिसका नाम मिनाक्षी एक टेल ऑफ थ्री सीटीज नाम है किन्तु जिसको भारत के सिनेमा घरो में नही चलने दीया। 2006 में इनके ऊपर भारत माता का नग्न चित्रण आरोप लगाया। लगभग 100 से भी ज्यादा आरोप लगाये इसलिए 2006 में स्वेच्छा से भारत छोड़ कर इंग्लैण्ड चले गए। वहां पर 19 साल की लड़की से फिर से शादी कर ली। और उसी को मॉडल बनाते हुए 2008 में एक पेन्टीग बनायी जो 16 लाख में बिकी। लगभग उसी समय केरल सरकार द्वारा भारत का सर्वोच्च पुरस्कार (पुरस्कार) राजा रवि वर्मा से पुरस्कृत हुए। 2010 में कतर की नागरिकता ली। तथा जोर्डन की राजस्थानी अम्मान स्थित (रॉयल इस्लामिक स्ट्डीज) सैंटर में विश्व के 500 प्रभावशाली मुसलमानो में गिना गया।

2001 में कामसूत्र सीरिज की 30 पेन्टींग बनायी और 9 जून 2011 में दिल का दौरा आने से रॉयल ब्रोमपटन हॉस्पिटल में मुम्बई में अन्तिम श्वास ली।

Q.7 M F हुसैन के चित्रों के बारे में एक लेख लिखिए।

अथवा :- M.F हुसैन का जीवन परिचय लिखते हुए संघर्ष शील जीवन का वर्णन कीजिए।

K.H ARA (आरा) (कृष्णाजी हवलाजी आरा)

Q. K.H. आरा के संघर्ष में कला पूर्ण जीवन का वर्णन करो।

K.H आरा का पूरा नाम कृष्णाजी हवलाजी आरा है। इनका जन्म 16 अप्रैल 1913 में आंध्रप्रदेश के हैदराबाद शहर में हुआ। 3 वर्ष की आयु में इनकी माता जी की मृत्यु हो गई। परिणाम स्वरूप 7 वर्ष की आयु में बम्बई आ गया और कार क्लिनर की सफाई करने का काम शुरू कर दिया। कुछ समय पश्चात जापान की एक कार कम्पनी में कार क्लिनर की नौकरी कर ली इस कम्पनी के मालिक ने अपने निवास स्थान पर ही सर्वेन्ट रूम में रहने लग गए किन्तु अचानक पर्ल हार्बर में आक्रमण होने के कारण इस कम्पनी का मालिक हमेशा 2 के लिए गायब हो गया। और वह मकान आजीवन

आरा के पास ही रह गया। जब यह मकान आरा का चित्रकला कार्यशाला बन गया। इन्होंने पेंग ग्रुप की स्थापना की प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप जिसमें सूजा M.F हुसैन भावी चित्रकारों को सम्मलित किया। 1950 - 60 के दशक में एक ख्याति प्राप्त चित्रकार के रूप में प्रसिद्ध हो गये। 1952 में न्याय मूर्ति चित्रपर स्वर्ण पदक पुरस्कार मिला इसके पश्चात ललित कला अकादमी का स्थायी सदस्य बना दिया। इनके चित्र तैल रंग में बनाये गए जल रंग एवं गौचा पद्धति के चित्र भी बनाये गये।

सत्याग्रह आन्दोलन नमक बनाओ सत्याग्रह में उन्होंने भाग लिया जिसके कारण इन्हें पाँच माह की जेल हुई।

इनके चित्र विषय है—

1. नग्न चित्र
2. आंचल चित्र

3. मानव आकृतियाँ

आर्टिस्टीर सेन्टर को आजीवन सचिव बना दिए गए जिसमें नव शिक्षित कलाकारों को अपने खर्च पर चित्रकला की शिक्षा दी जाती थी परन्तु मन्द योग्यों को खाद्य सामग्री में प्रदान कि गए। गरीब स्तर के लोगों को इस प्रकार से सहायता देकर चित्रकार बनाये गए। इस लिए आर्टिस्ट सेंटर का महत्वपूर्ण योगदान है। इनकी मृत्यु 28 मार्च 2002 को मुम्बई में हुई।

F.N सूजा (फ्रांसिस न्यूटन सूजा)
→ 12 April 1924 गोवा
→ 28 March 2002 मुम्बई

F.N सूजा : का पूरा नाम फ्रांसिस न्यूटन सूजा है। इनका जन्म 12 अप्रैल 1924 में हुआ। इनका जन्म स्थान गोवा के सालेगाओ नामक स्थान पर हुआ। तीन वर्ष की आयु में इनके पिता की मृत्यु हो गई। इसलिए इनकी माता को सिलाई का काम करना पड़ा। जिसका परिणाम इनके चित्रों में दिखाई देता है। इन्होंने मुम्बई के सेन्ट जेवियर कॉलेज में एडमिशन लिया। जहा पर टॉयलेट में चित्र बनाने के कारण निष्कासित कर दिया गया। सफाई के तौर पर अपने दालान की मैं पुराने गन्दे चित्र को ठीक कर रहा था। किन्तु कॉलेज प्रशासन इस बात से सहमत नहीं हुये। अन्त में सर जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट में एडमिशन लिया यहा पर अध्ययन करते हुए भारत छोड़ो

आन्दोलन में शामिल होने की वजय से पुनः निष्काशित कर दिये गये।
1947 ई. वी. में रजा एवं हुसैन के साथ पैग ग्रुप में शामिल हुये।
1948 ई. वी में लंदन में प्रदर्शनी के
1949 ई. वी. में भारत छोड़ कर इंग्लैण्ड चले गए। जहाँ पर अपने आप को चित्रकार साबित करने में बहुत कठिनाइयाँ आयी। इसलिए इन्होंने पत्रकारिता की नौकरी कर ली।
1954 में लन्दन के दा ~~इस्ट~~ इंस्टिट्यूट ऑफ कंटेम्परी आर्टस में दाखिला लिया और कला का अध्ययन करने लगे। 1955 में एक आत्म कथा का प्रकाशन किया जिसका नाम निर्वाना ऑफ द मेगोट स्त्रीफ स्त्रीफेन इस्पेंडर पत्रिका में प्रकाशन किया। जिसके परिणाम स्वरूप इस्पेंडर ने एक गैलरी का मालिक एवं चित्र~~कार~~ के डिलर से मुलाकात करवा दी। जिसके परिणाम स्वरूप सूजा के 1955 में प्रदर्शित किये गये कि रामरन्त चित्र बिक

गये। अब इनकी गिनती चित्रकारो में
होने लगी। किन्तु ~~पत्रि~~ पत्रकारिता
का कार्य नहीं छोड़ा और 1959
में वर्डस एवं लांइस प्रकाशित की
इसके पश्चात 1967 में न्यूयॉर्क चले
गये। 1977 में कामन वैल्थ आर्टिस्ट
ऑफ फ्रेम नामक प्रदर्शिनी में भाग
लिया। 1954 और 1960 में एकल
प्रदर्शनी पैरिस में की। 1968
में डेट्रॉइड, 1987 व 1996 में दिल्ली
1987 में मुम्बई, 1988 कराचिह में
प्रदर्शनी की, 2005 में ~~[illegible]~~
बर्थ क्रिस्टी नामक चित्र 11.5 करोड़
में अनिल अंबानी ने खरीदा जो
~~2015~~ 2015 में 27 करोड़ में दिल्ली
के व्यापारी किरण नादर ने
खरीद लि। अब ये सबसे महँगे
चित्रकारो में शामिल हो गए। इन्होंने
तीन शादीयाँ की किन्तु अन्त में मरते
समय श्रीमति लाल के पास रहे।
28 मार्च 2002 में मृत्यु हुई।
इनके चित्र यू. के., लन्दन जापान
इजराइल भारत आस्ट्रेलिया अमेरिका
में संग्रहीत हैं।

Date 17/8/2023
Page 8

"S.H. रजा"

Q. S H रजा की चित्रकला के बारे में टिप्पणी लिखिए।

अथवा

सैयद हैदर रजा की चित्रकला के क्षेत्र में योगदान का विस्तृत वर्णन कीजिए।

सैयद हैदर रजा का जन्म 1922 में मध्यप्रदेश के बावरिय नामक स्थान पर हुआ। इनके पिता वनविभाग में सर्वेयर की नौकरी करते है इसी कारण उन्होंने जनरल की खूबसूरत प्रकृति झरना एवं सूर्य की रोशनी से है पड़ने वाले विभिन्न प्रभाव को गहराई से अध्ययन किया। इनके पिता इन्हें चित्रकला की शिक्षा नहीं दिलवाना चाहते थे किन्तु बाल हट व माताजी के प्रयास से नागपुर के चित्रकार श्री उसोले के पास प्रकृति चित्र सिखने के लिए भेज दिया इसके पश्चात सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट में दाखिला ले लिया जहाँ से पाँच वर्षीय डिप्लोमा प्राप्त किया। 1947 ई.वी. में इनकी

माता जी का देहान्त हो गया। जिसके सदमे में उभरने के लिए चित्रकला का कार्य छोड़ के 1950 तक भारत का भ्रमण किया, तथा हर राज्य में कला एवं संस्कृति प्रकृति भूमि एवं वातावरण अध्ययन लोक जन जीवन का अध्ययन किया।

रजा के चित्रों के प्रिय विषय :-

1. प्रकृति चित्र
2. शहरी हलचल
3. कारखानों की चिमनीयाँ एवं उड़ता धुआँ
4. नगर दृश्य

1950 ई. वी. में रजा को फ्रांस की छात्रवृति मिली जहाँ पर 1950-1953 इकोल नेशनाल दा बाजार में चित्रकला का अध्ययन किया साथ ही ईडली फ्रांस इ स्पेन की यात्रा की। और "तोते दे का दृश्य" से लोग प्रभावित हुए। 1956 में पेरिस का प्रि. द. ल. क्रिटीक का पुरस्कार मिला।

इन्हीं दिनों में इन्हें एक फ्रांसीसी महिला के संपर्क में आये परिणाम स्वरूप 1959 में शादी हो गई। समय - समय पर भारत आते रहे। किन्तु इनका मन फ्रांस में ही बसने का हो गया। 1959, 1968, 1976, 1978, 198 में भारत आये इसके अतिरिक्त फ्रांस की नागरिकता लेकर वहीं बस गये।

रज़ा के पुरस्कार :-

1. 24 वर्ष की आयु में 1946 में बम्बई आर्ट सोसायटी द्वारा रजत पदक दिया गया। इसी के साथ पेग ग्रुप के सदस्य बने

2. 1984 में ललित कला अकादमी नई दिल्ली द्वारा फैलो चुने गये।

3. 1981 में पद्मश्री का पुरस्कार मिला। 2007 में पद्मभूषण से पुरस्कार से ~~पुरस्कृत~~ किया।

3. 2007 मे पद्मभूषण पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। ~~2013~~

4. 2013 में पद्मविभूषण का पुरस्कार मिला।

5. 1978 में मध्यप्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत किया गया।

रज़ा के चित्रों की चित्र शैली एवं विशेषताएँ :-

रजा आरम्भ में प्रकृति चित्रण करते थे। किन्तु फ्रांस जाने के पश्चात उन्हीं शैली गणवादी चित्रकला से प्रेरित हो गये। जिसके परिणाम स्वरूप इनके चित्रों में सर्किल, त्रिभुज, वर्गाकार, अष्टकोण रूपों का समावेश करने लग गये। बाद में उनकी शैली आत्माभिव्यक्तिवादी कहलाई। इनके अनुसार रंग योजना गहरे से हल्के की तरफ होना चाहिए।

1962 में अमेरिका गये जहाँ पर

कैलिफोर्निया विश्व विद्यालय में लेक्चरर रहीं। उन्होंने पी.एच.डी. 23 जुलाई 2016 को दिल्ली में उन्होंने अन्तिम प्रयाण की।

N S vendra (नारायण श्रीधर बेन्द्रे)

N S बेन्द्रे का पुरा नाम नारायण श्रीधर बेन्द्रे है। इनका जन्म इन्दौर में 21 अगस्त 1910 में हुआ। ये मध्यम परिवार में पैदा हुये। इनके चित्रकला के प्रति होने के कारण इन्होने पिता से कला शिक्षा में अध्ययन करने के लिए निवेदन किया। किन्तु पिता ने गंभीरी को शौक मानते हुए मना कर दिया। किन्तु अन्त में (श्री) डी. डी देवलालीकर के निर्देशन में स्नातक की डिग्री 1933 में पुरी की। इसी दौरान कक्षा में रंग के ज्ञान के बारे में डी.डी. देवलालीकर ने बताया कि बेन्द्रे मिट्टि के तेल का कलशकार का रंगांकन करते समय नीले रंग के साथ में भूरे रंग का भी प्रयोग किया। उसी समय ये घोषणा कर दी कि बेन्द्रे एक दिन बहुत बड़ा चित्रकार बनेगा। 1934 ई.वी. में बम्बई से ~~ड~~। डिप्लोमा किया घुमक्कड चित्र बनाये।

जो इनके भाई को ही चित्रित किया था। जिस पर बम्बई आर्ट सोसायटी द्वारा रजत पदक दिया गया। मुख्यतः देवलालीकर जी इन्हे दर्शीय चित्रों का विशेष अध्ययन करवाया। जिसमें प्रथम फिर भी एक दर्शीय को प्रातः - काल द्वितिय दोपहर तृतिय संयंकालीन छाया प्रकाश एवं वातावरणीय प्रभाव का अध्ययन करवाया। इसके पश्चात एक दिन कुछ दोस्तों के साथ साइकिल से ही अंजता को देखने चले गए। लेकिन उन चित्रों से उन पर कोई प्रभाव नही पड़ा अन्त में भारत भ्रमण करते हुए कश्मिर पहुंचे। वहा की कला से प्रभावित होते हुए उन्होने ~~बाल~~ वहा की संस्था "कला सोसायटी" में अपने चित्र भेजे जिसमें उन्हें रजत पदक मिला। ये पहले कलाकार थे जो काश्मिर के बाहर के रहने वाले थे। और इन्हे पुरस्कृत किया गया बल्कि 1937 से 1939 तक काश्मिर विजिटर ब्यूरो में काम

मिल गया। अन्त में समझ में आया कि वे भारत के अन्य कलाओं एवं कलाकारों से कट गए। इसलिए इतिफा देकर मद्रास आ गये और 1940 में एक फिल्म का निर्देशन किया। किया किन्तु यहा भी एक सिमित दायरा रहा। अब उन्हे बम्बई आकर पेंटीग बनाने लगे। और उन्हें बम्बई आर्ट सोशायटी द्वारा स्वर्ण पदक मिला।
1935 में भी गली का आकर्षण नामक चित्र पर रजत पदक व ~~सर्वे~~ का राज्यपाल से पुरस्कृत हो चुके।
1952 ई.वी. में विवाह कर लिया तथा 1953 ई.वी में मुम्बई में प्रथम एकल प्रदर्शनी कि जिसमें उनके 37 चित्रो में से 37 बिक गये। जिससे कुल 10000 की आय हुई। 1956 ई.वी. में पटेल ट्रॉफि से सम्मानित किया गया जिसमें बेन्द्रे को सभा-पति से पुरस्कृत किया गया।
1947 से 1950 के मध्य अमेरिका, फ्रांस, जापान, बेल्जीयम, पोलेण्ड को

यात्रा के अन्त में अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर में मूर्तिकला तथा सेरेमिक कला का अध्ययन किया किन्तु इसका प्रभाव ~~किया~~ भी अधिक समय तक नहीं रहा। किन्तु यहा पर छाप चित्रों और जल रंगों का अध्ययन करते हुए एक प्रदर्शनी का आयोजन किया जिसमें 52 में से 40 चित्र बिक गये। 1948 में महात्मा गाँधी की हत्या हो जाने से उनका मन उचट गया और व भारत आ गए। 1950 ई० में गुजरात में महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय में डीन की नौकरी करी 1966 में यहा से भी इस्तीफा दे दिया

बेन्द्रे को प्राप्त पुरस्कार का विवरण:

- 1934 ई.वी. में ~~घुम~~ घुमक्कड़ चित्र पर रजत पदक मिला।

- ~~ट~~ 1935 में गली का आकर्षण चित्र पर रजत पदक मिला।

- 1947 में मुम्बई आर्ट सोसाइटी द्वारा रजत पदक मिला।

- 1946 में पटेल ट्राफि मिली

- 1969 में पद्म श्री का पुरस्कार मिला।

- 1971 में द्वितिय त्रिनालय के चेयर मैन बने।

- 1974 में ललित कला अकादमी में फैलो नियुक्त किया गया।

- 1956 ई. में बरोदा ग्रुप ऑफ पेन्टर की स्थापना की। साथ ही खैरागढ़ विश्व विद्याल से डी. लिट की उपाधि प्राप्त की 1982 में शांति निकेतन चले गए। तथा फरवरी 1992 में इनकी मृत्यु हो गई इनके प्रमुख चित्र श्रृंगार, सूर्यमुखी के फूल, फूल बेचने वाली, स्त्रीयाँ घुमक्कड़ एवं प्रकृति चित्रांकन है। → गली का आकर्षण मुख्य है।

Date 22|

तैयब मेहता :-

तैयब मेहता का जन्म 26 जुलाई 1925 में गुजरात के खेड़ा जिले में हुआ था।
किन्तु इनका पालन पोषण कावफोर्ड मार्केट में दाऊदी समुदाय में हुआ इनके पिता एक मूर्तिकार थे, इसलिए इनको कला ~~शिक्षा~~ शिक्षा लेने में कोई संघर्ष नही करना पड़ा 1947 ई. वी में भारत विभाजन के समय हुए उपद्रव में दो समुदाय आपस में पत्थर बाजी कर रहे थे जिसमें कई लोगो का सिर फटा इस खूनी मंजर को इन्होने आंखो से देखा जिसकी झलक इनके सभी चित्रो में दिखाई पड़ती है।
सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट मे बम्बई से इन्होने 1952 में डिप्लोमा किया तथा पैग ग्रुप में सम्मिलित हुऐ।

साथ ही फैमल स्टूडीयों में फिल्म एडिटर का कार्य किया। 1959 में लंदन चले गये तथा 1964 तक पश्चिमी चित्रकला का अध्ययन किया।

1968 में जान डी राख फेलर फैलोशिप मिली जिसके द्वारा न्यूयॉर्क जाकर सूक्ष्मवादी चित्रों का अध्ययन किया। इसके पश्चात भारत आये और बान्द्रा स्थित बूचड़खाना में कुदाल फिल्म बनायी जो 1970 के फिल्म फेयर में प्रदर्शित की गई। जिसे ~~क्रिक~~ क्रिटिक्स अवार्ड अवार्ड मिला। इसी समय मुम्बई रहते हुए "बन्धे हुए सांड" तथा रिक्शा पुलर्स" फैमस चित्र बनाया।

1984 व 1995 के मध्य शांतिनिकेतन रहे। 1970 के दशक में डायगनल श्रृंखला चित्रित की जो पश्चिम की चित्रकला आभिव्यंजनावाद तथा अतियथार्थवाद का मिश्रित रूप है 2002 में ~~क्रिटिक्स~~ लिपि की निलामि में 1.5 करोड़ की

पेंटिंग ~~बिक्री~~ बिक्री

2005 में काली शिर्षक वाली पेंटिंग करोड़ में स्टीवन आर्टे ने खरीदा। 2008 में क्रिस्टि ने एक और पेंटिंग खरीदी जिसका मूल्य 20 लाख डॉलर था।

2005 में मोस्चर नामक पेंटिंग भारत निवासी रंजीत मलकानि ने 3.1 करोड़ में खरीदा।

तयब मेहता का व्यक्तिगत जीवन :-

-> तयब मेहता की पत्नी का नाम सकिला था

-> इन्होंने अपने जीवन में मुम्बई शान्ति निकेतन लन्दन और न्यूयॉर्क में निवास किया।

-> इनके पुत्र यूसुफ तथा पुत्री हिमानी हैं।

तयब मेहता का पुरस्कार :-

1. 1968 में जान डी राकफेलर फेलोशिप

2. 1970 में कुदाल फिल्म को क्रिटिक्स अवार्ड मिला।

3. 1974 में फ्रांस इन्टरनेशनल फैस्टीवल ऑफ पेंटिंग में स्वर्ण पदक मिला।

4. 1988 में मध्यप्रदेश सरकार द्वारा कालीदास सम्मान से पुरस्कृत किया गया।

5. 2005 में दयावती फाउंडेशन पुरस्कार मिला।

6. 2007 में पद्मभूषण पुरस्कार मिला।

चित्रकला के विद्यार्थी एवं कला शिक्षक के रूप में अपूर्व योगदान देते हुए 2 जुलाई 2009 को स्वर्गवास हो गया।

"के. के. हैब्बर"

केटीगेरी कृष्णा हैब्बर का जन्म 1912 ई. वी. में केटीगेरी नामक स्थान पर कर्नाटक राज्य में ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनका पूरा नाम "केटीगेरी कृष्णा हैब्बर" है। इनके पिता मूर्तिकार थे वे गणेश प्रतिमा बनाया करते थे। इसलिए के. के. हैब्बर की रुचि चित्रकला के प्रति हुई। परिणामस्वरूप सर जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट में बम्बई में 1940 में प्रवेश लिया। और 1945 में डिप्लोमा पूर्ण किया। इसके पश्चात पेरिस जाकर "अकादमी जूलियन" नामक संस्था में चित्रकला का अध्ययन किया।

कार्य क्षेत्र में योगदान:

हैब्बर के आरम्भिक जीवन के चित्रकला को केरल चरण कहा जाता है। इस समय गाँव तथा ~~नगरीय~~ शहर में

अमृता शेरगिल के प्रभाव में थे। इसके पश्चात 1965 में "आर्ट नाउ इन इण्डिया" लंदन स्थित ब्रसेल्स आर्ट आउ इन इण्डिया" नामक प्रदर्शनी में भाग लिया जिसमें उनको अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई। इसके पश्चात इन्होंने वेनिस बिनाले में प्रदर्शनी की इसके साथ ही साओ पाउलो आर्ट बुर्ड एनिअल में प्रदर्शनी की साथ ही जापान के टोक्यो शहर में भी प्रदर्शनी की।

के.के. हेब्बार सर J.J. स्कूल ऑफ आर्ट में लेक्चरर के पद पर रहे। इनके मुम्बई में रहते हुए प्रमुख चित्र निम्न चित्रित किये।

1. मुर्गो की लड़ाई।
2. मजदूर मछुआरों, फल बेचने वाले।

पाश्चिमी चित्रकला से प्रभावित होकर मुख्य चित्र निम्न हैं:—

पनघट, साधु, हाट बाजार, मुर्गों की लड़ाई।

पुरस्कार :-

1. ऐकेडमिक ऑफ फाइन आर्ट मुम्बई राज्य पुरस्कार
2. ललित कला अकादमी नई दिल्ली द्वारा फैलो
3. पद्मश्री
4. पद्म भूषण
5. ~~कला~~ । वर्मा शिल्पी के वेनकटप्पा के पुरस्कार
6. मैसूर विश्वविद्यालय द्वारा पी. एच डी.
7. सौवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार
8. ~~21 जुलाई~~

21 जुलाई 2007 में लम्बी बिमारी के कारण इनकी मृत्यु हो गई।

Date: 24/8/2023

"सतीश गुजराल"

सतीश गुजराल का जन्म दिसम्बर 1925 में झेलम जिले में 20 अविभाजित पाकिस्तान में हुआ था। इन्होंने लाहौर स्थित मेयो स्कूल में अध्ययन किया जहाँ पर पाँच वर्ष तक मिट्टी की मूर्ति, ग्राफिक्स, सेरेमिक का अध्ययन किया।

1944 ई. वी. में Sir J. J. School of Art बम्बे में प्रवेश लिया। किन्तु 1947 ई. वी. में बीमार हुये। और पढ़ाई छोड़ दी।

7 वर्ष की आयु में पैर फिसलने से गिर गये जिससे सिर फूटा पैर टूटे सुनाई भी कम देने लग गया इसलिए इनको लंगड़ा बहरा गूंगा कहने लगे। परिणाम स्वरूप इनके चित्र निराशाजनक भावना प्रदान चित्र है जिसमें आकार, रेखा चित्र श्रेष्ठ हैं।

इन्हे दो बार नेशनल अवार्ड मिला है। जो राजस्था ललित कला अकादमी

द्वारा चित्र कला के लिए दिया गया है।
और एक बार मूर्ति कला के
लिए पुरस्कृत किया गया। इन्हें
स्वतंत्र भारत के चित्रकार, मूर्तिकार,
एवं भित्ति चित्रकार के रूप में
जाने जाते थे।
मैक्सिको सरकार द्वारा लियो नार्डो दा विन्ची
का पुरस्कार दिया गया। इसी वर्ष
"आर्डर ऑफ़ क्राउन" पुरस्कार भी
मिला।
1999 में पद्म विभूषण पुरस्कार
मिला।
बगीचे की चिड़िया इनका सर्वश्रेष्ठ
चित्र है।

गुजरात के कार्यालयों को रिकार्ड पर
लेते हुए फिल्म प्रभाग में एक लघु
चित्र वृत फिल्म का निर्माण किया
जिसका शीर्षक सिद्धार्थ गुर्जर है
और इसके निर्देशक बलवन्त गार्गी
हैं। 2007 है B.B.C T.V. फिल्म
प्रदर्शन द इंडिया
के बैंक का एक हिस्सा थे।

19 फरवरी 2012 को हुए थ्रश। विद्
लाइफ ऐ शिल्प की 24 मीनट
की डोक्यूमेन्ट्री फिल्म बनाई

व्यक्तिगत जीवन :-
सतीश गुजराल
की पत्नी का नाम किरण है इनके
एक पुत्र वास्तुकार है और पुत्री
रसील इंटीरियर डिजाइनर है इनकी
विशाल स्थान 1952 से 1974 तक
न्यूयॉर्क मार्ग नई दिल्ली बर्लिन
रहा है।

Q. सतीश गुजराल की कलाकृतियों का
विवेचन कीजिए।
अथवा

Q. गुजराल के श्रेष्ठतम चित्रों का वर्णन
करते हुए मूर्तिकला चित्रकला
के भित्तिचित्र का वर्णन कीजिए।

के जी सुब्रमण्यम

के. जी. सुब्रमण्यम का पूरा नाम कलपती गलपति सुब्रमण्यम है। इनको संक्षेप में प्यार से (मनी) भी कहते हैं।
इनका जन्म केरल के पालघाट में 1924 में हुआ।
यहां से बंगाल चले गए। जहां पर 1944 ई. वी. में शान्तिनिकेतन कला महाविद्यालय में कला की शिक्षा ली। जहां पर नन्दलाल बसु तथा विनोद बिहारी मुखरजी से कला शिक्षा प्राप्त की इनकी नन्दलाल बसु से नहीं बनती थी लेकिन मुखर्जी के प्रिय शिष्य बन गये।

=) 1955 ई वी में स्लेड स्कूल ऑफ आर्ट लन्दन में अध्ययन किया।

=) 1966 में रॉकफेलर के छात्रवृति से अमेरिका गए। जहां पर धनवादी चित्रों का अध्ययन किया।

=) 1978 में मूविंग फोकस नामक पुस्तक लिखि। और गुजरात के महाराजा सहयाजीराव ~~विश्व~~ विश्वविद्यालय में कला के

प्रोफेसर के पद पर कार्य किये।
=> 1948 में विनोद बिहारी मुखर्जी के साथ हिन्दी भवन शान्तिनिकेतन में भित्ती चित्र का कार्य किया।
=> 1961 ई० में साओ पाओलो में प्रदर्शनी की इसके पश्चात् जापान, लन्दन में भी प्रदर्शनी की।
=> 1985 में चीन आस्ट्रेलिया ब्राजील की यात्रा की एवं प्रदर्शनी की।

के. जी. सुब्रमण्यम की कला :-

सुब्रमण्यम मूल रूप से भित्ति चित्रकार व मूर्तिकार थे इन्होंने टेक्सटाइल डीजाइन, खिलौने डीजाइन विशेष रूप से बनायें। इसलिए हेण्डलूम विभाग में डीजाइन विभाग के अध्यक्ष रहे। इन्होंने अपने चित्रों में चिकने धरातल पर डीजाइन बढ़ाकर सुलिपि का प्रयोग किया। इनके चित्रों में रंग चमकदार है तथा रेत, बालू, मिट्टी संगमरमर का चूर्ण आदि को

प्रयोग इन चिकने चमकदार रंगो वाले धरातल पर प्रयोग किया और टेक्चर विकसीत किये।
कभी - कभी रंग गोण हो गए। इनपर प्लाइवुड मार्चिस की तिलिया उलझे हुए तार का प्रयोग किया इस समय के चित्रों में एकहरे या भूरे रंगों का प्रयोग किया। जो रेखा की चित्र श्रृंखला के नाम से प्रसिद्ध है।

भित्ति चित्रों में उभारदार भित्ति चित्र बनाये। जो रिलिफ भित्ति चित्र की श्रेणी में आती है। इसमें टेराकोटा टाइलो को चित्रित करके भित्ति पर पेस्ट कर दिया।

सुब्रमण्यम के भित्ति चित्र :-

1. "ज्योति लिमिटेड" बड़ोदरा में 1955, 1965, 1976 मे भित्ति चित्रण किया

2. रवीन्द्रालय लखनऊ में 1963 में भित्ति चित्र बनाये।
3. ललित कला संकाय 1964 में
4. भारतीय मंडप न्यूयॉर्क विश्व मेले में 1964 से 65 के मध्य भित्ति चित्र बनाये।
5. "मेरे सपनों का भारत" मंडप गाँधी दर्शन नई दिल्ली में 1969 में भित्ति चित्र बनाये। इनके चित्रों में मुर्गा बेचने वाला मुख्य चित्र है।

के॰ जी॰ सुब्रमण्यम के पुरस्कार :-

1. 1957 से 1959 तक मुम्बई आर्ट सोसायटी द्वारा लगातार तीन बार पुरस्कृत हुये।
2. 1961 में महाराष्ट्र राज्य की प्रदर्शनी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।
3. 1961 ई॰ में साओ पाओलो की प्रदर्शनी में ब्राजील सरकार का विशिष्ट सम्मान प्राप्त हुआ।
4. 1965 ई॰ में ललित कला अकादमी नई दिल्ली में फैलो "रत्न सदस्य" ~~बने~~ चुने गये।

5. 1975 ई. में पद्मश्री का पुरस्कार मिला।

1981 ई. में कालिदास पुरस्कार मिला जो 1982 में भारत भवन का उद्घाटन करने इंद्रा गाँधी ने 13 फरवरी 1982 को कालिदास पुरस्कार प्रदान किया।

6. 29 जून 2016 को उनकी मृत्यु हो गई।

Q. "रामकुमार की चित्रकला" की समीक्षा कीजिए
अथवा:
Q. रामकुमार का चित्रकला में योगदान का वर्णन करो।

उत्तर रामकुमार का जन्म 1924 ई. वी. में शिमला में खत्री परिवार में हुआ था। उनकी माता दिल्ली की रहने वाली थी और पिता सरकारी नौकरी में थे। इसी वजह से ननिहाल आने के बहाने शिमला और दिल्ली आना जाना बना रहा जिसके कारण दिल्ली से ज्यादा लगाव हो गया। इन्होंने हरकोर्ट बटलर हाई स्कूल में पढ़ाई की इस समय इनकी रुचि वायलिन बजाने में रुचि थी। इसके पश्चात सेंट स्टीफेन अर्थशास्त्र में बी.ए. (B.A) किया इसके पश्चात दिल्ली से अर्थशास्त्र में (M.A) किया।
उस समय अर्थशास्त्र के महान बुद्धिमान V.K.R.B राव तथा डॉ जाकिर हुसैन से शिक्षा प्राप्त की।
अब इनकी रुचि संगीत की ओर

से हट कर हिन्दी की तरफ बढ़ गई। साहित्य एवं लेख लिखने लग गये। M.A. करते हुए सांयकालीन शारदा उकील नामक कला विद्यालय में सांयकालीन कक्षाएँ लेकर बंगाल शैली की कलाकार शैलजा मुखर्जी से शिक्षा लेने लग गए। 1947 ई.वी. में बैंक की नौकरी की किन्तु साथ में चित्रकारी का काम भी कर पा रहे थे। अतः नौकरी छोड़कर पार्टटाइम काम करने लगे और शेष समय में चित्रकारी करने लग गए।

1946 ई.वी. में ऑल इण्डिया फाइनआर्ट एण्ड क्राफ्ट सोसायटी की अन्तर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी ~~काला~~ में भाग लिया। जिसमें विचलित शीर्षक पेंटिंग प्रदर्शित की।

इसके पश्चात् 1948 में शिल्पीचक्र के सदस्य बन गये। इसी समय रजा की पेंटिंग की प्रदर्शनी चल रही थी जिसमें रजा के गुरु लेगा हमर से मुलाकात हुई। जिसमें रजा के

गुरु ने रामकुमार को चित्रकार बनने से मना कर दिया।

1950 ई॰ में पेरिस गये वहाँ वर्ष तरसा हैलासिमी से चित्रकारी की और कोलम्बो में शांति सम्मेलन में भाग लिया।

1950 - 1951 में आन्द्रे ल्होते में प्रवेश लिया जहा पर घनवादी चित्रण करना पसन्द नही आया। और रूस हंगरी चले गए। इसके पश्चात फरनां जेले में प्रवेश लिया। जहाँ पर समन्वयवादी कला सिखने को मिला किन्तु इसे भी छोड़ दी। इसके पश्चात भारत लौटे और रिचर्ड बार्थो लोम्यू कला समिक्षक से परिचय हुआ।

1955 में विख्यात चित्रकार बन पाये

कला शैली :-

आरम्भीक चित्रों में सामाजीक आकृतियाँ आँखे बड़ी-2 एवं चमकदार रंगों का प्रयोग किया गया।

चित्रों में वर्ग, त्रिभुज, वृत्त षटकोण का प्रयोग करते हुए शहरी भवनों को भाव-हीन पृष्ठभूमि चित्रित की। हाथों को विचित्र मुद्राओं में करके, पैर, उदास चेहरा, भूरा मटमैला कत्थई काला नीला, रंग का प्रयोग किया। कहीं-कहीं पर पीले रंग का भी स्पर्श दिया। कि घूमती गलियां, खिंचे तार निष्क्रिय वातावरण कागज के मकान चित्रित किया।

वाराणसी के पर्व चित्रों व स्केच की अमूर्त उत्तम उदाहरण है 1965-67 के मध्य इक चित्र मोम चित्र व एक्रेलिक रंगों के चित्र बनाये। 1969 में इनका हृदय परिवर्तन हुआ और अचानक चमकदार रंगों का प्रयोग करने लग गये। कालपात्र परिप्रेक्ष्य का संयोजन किया नाइफ से चित्रकारी की। रंगों को कैनवास से नाइफ से लगाया फिर उसी नाइफ से रंगों को खुरच खुरच कर हटाया।

जिससे चुनाव का आयाम हुआ इसी समय अमेरिकन चित्रकार पॉलक तथा कुनिंग से परिचय हुआ जिनसे प्रभावित होकर अभिव्यंजनावाद पेंटिंग बनाई।

रामकुमार के प्रसिद्ध चित्र :-

1. 1954 में परिवार
2. 1957 में दो बहिने (लिथोग्राफ)
3. प्रार्थना (तैल रंग)
4. 1965 में नगर दृश्य (जलरंग)
5. 1982 में उड़ान (तैल रंग)
6. 1966 में बसन्त (तैल रंग)

पुरस्कार :-

1956 व 1958 में ललित कला अकादमी पुरस्कार मिला।
1958 में एक्ज़ीबिशन कॉफ़ फाइन आर्ट पुरस्कार मिला।
1972 में पद्म श्री
1986 में कालीदास सम्मान
2010 में पद्म भूषण पुरस्कार मिला।
14 अप्रैल 2018 को इनकी मृत्यु हो गई

Q. "विकास भट्टाचार्य" की चित्रकला की समीक्षा कीजिए।

उत्तर विकास भट्टाचार्य का जन्म 1940 ई.वी. में पश्चिमी बंगाल में हुआ। 1963 ई.वी. में इण्डियन कॉलेज ऑफ आर्ट एण्ड ड्राफ्ट मेन ~~शिक्षा~~ शिप में स्नातक की शिक्षा प्राप्त की। 1968 ई.वी. में इसी कॉलेज में शिक्षक बने।

1973 ई.वी. में गवर्मेन्ट कॉलेज ~~ऑफ~~ आर्ट एण्ड क्राफ्ट में कला शिक्षा के पद पर कार्यरत रहे।

1982 ई.वी. में यहा से रिटायर्ड हुए।

चित्र शैली :-

ये तेल रंग के चित्रकार थे। पाश्चिमी शैली से प्रेरित होकर यथार्थवादी चित्रण किया। पर्दे में महिला की गुणवत्ता ~~व~~ त्वचा का रंग पुरानी इमारतो का ढलता हुआ रंग का जादू की तरह चित्रण किया इनके चित्रो में स्त्रीयो

को आमुख आख्यान आध्यात्मिकता से परिमुज हुई।

कलाकार ने लेखक संदेश बोस के साथ सहयोग किया। तथा रामकिंकर की जीवनी पर एक काल्पनिक जीवन शैली पर चित्रण किया। किन्तु संदेश बोस की आकस्मिक निधन होने के कारण यह कार्य पूरा नहीं हो सका

विवान सुन्दरम :-

विवान सुन्दरम का जन्म 28 मई 1943 में शिमला में हुआ। इनके पिता कल्याण सुन्दरम 1968 - 1971 तक भारतीय साक्षरता आयोग में उच्च पद पर कार्य किया। इनकी बहन इन्द्रा शेरगिल थी। जो एक चित्रकार थी, इसी से प्रेरित होकर विवान सुन्दरम् को कला शिक्षा दिलवाने का फैसला किया सर्वप्रथम दून स्कूल में पढ़ाई की जहां पर ऑजान वानगो की पेन्टिंग का

उसके पश्चात MS कॉलेज में अध्ययन किया। इसके पश्चात स्वयं स्लेड स्कूल ऑफ आर्ट में चित्रकला का अध्ययन किया।

चित्रण शैली :-

इन्होंने मूर्तिकला छाप चित्र, फोटोग्राफी, इंस्टालेशन एवं

विडियो ग्राफी पर कार्य किया।
आधूनिक स्थापनाओ मे दादावाद, अतियथावाद, एवं अभिव्यंजनावाद शैली के चित्र बनाये।

पुरस्कार :-

1. कॉमन वेल्थ स्कॉलरशिप
2. अंतराष्ट्रीय कला उत्सवो मे स्वर्ण पदक,
3. हिटेक ऑफ अम्रता पर कैलेंडर
4. एक वाटर कलर फोटो मेटल तैयार किया
19 मार्च 2023 उनकी मृत्यु हो गई

29/6/2023

जगदीश स्वामीनाथन

J स्वामीनाथन का जन्म 21 जून 1928 को हुआ था। इनका जन्म स्थान शिमला में कश्मीर में हुआ। इनकी माता दिल्ली की रहने वाली थी इसलिए दिल्ली आना जाना रहा। इनके पिता का नाम NV जगदीश स्वामीनाथन था। जो एक शिल्पीश, सैनिक रहे। इनकी माता जमींदारी का काम सम्भालती थी।
इनकी आरम्भिक शिक्षा शिमला में हुई। और प्रतियोगी परीक्षा P.MT पास कर ली। जिससे मेडिकल की MBBS में प्रवेश ले लिया।

चित्रकला के प्रति इनकी कोई रुचि नहीं थी। लेकिन इनके मित्रों ने रामकुमार व निर्मल वर्मा प्रिय चित्रकार मित्र थे।

MBBS के प्रथम वर्ष में मुख्य परीक्षा में फ़ैल हो गए। और कलकत्ता भाग गये।

वहां पर छोटा मोटा काम करके खर्चा चलाया। और क्रान्ति-कारी कम्युनिस्टपार्टी के सदस्य बने। लेकिन किन्हीं कारणों से ये पार्टी छोड़कर समाजवादी दल में शामिल हो गए। लेकिन यदा कदा छोटे-मोटे पत्रिका में लेख लिख पाये अन्त में 1954 में विवाह ~~करना~~ कर लिया और अपने माता-पिता के साथ करोलबाग दिल्ली में रहने लगे। अब वे दैनिक हिन्दुस्तान अखबारों में लेख लिखने लगे। तथा सरिता पत्रिका में कहानियाँ लिखने लगे। 1956 से 1957 में पीपुलस पब्लिसिंग हाउस में नौकरी कर ली। और साम्यवादी लेखन का कार्य शुरु कर दिया। 1958 में ~~वर्सा~~ वारसा छात्रवृति मिली जो 3 वर्ष की थी। जिसमें 6 महिने बाद ही छोड़कर भाग आये। कुछ एक नाटकों का कला का ही कार्य किया था। और भारत लौट आये। अब दिल्ली आकर शैलजा मुखर्जी से नाटक शिक्षा ली। इसके साथ ही ग्रुप 1990

की स्थापना 1963 में प्रदर्शनी की जिसका उद्घाटन जवाहर लाल नेहरू ने किया।

1968 ई.वी. में त्रिनाले में सम्मानित किए गई। 1959 में "साओ पाओलो" ब्राजील की द्विवार्षिकी प्रदर्शनी में जुरी के सदस्य बनाये गए।
इस समय लिंग पत्रिका के सम्पादक थे। 1970 में केन्द्रीय ललित कला अकादमी का विरोध किया। इस "ग्रुप का नाम आर्टिस्ट प्रोटेस्ट मूमेंट" रखा गया। जिसमें स्वामीनाथन को सचिव बनाया गया।
13 फरवरी 1982 में भारत भवन (रूपंकर) के निर्देशक बने।
24 अप्रैल 1994 को स्वर्गवास होगया

स्वामीनाथन की चित्रकला :-

स्वामीनाथन की चित्रकला में प्रथम चरण में आदिम कला के चिन्हों को प्रयोग में लेते हुए भारतीय शैली में चित्रण किया। आदिम प्रतीक जैसे,

ओम स्वास्तिक, कमल, लिंग, सर्प, हाथ के छाप, चित्र, पैर के छाप चित्र इत्यादि को कला में नियोजित किया।
द्वितीय चरण में अन्तरिक्ष को रंगज्योति नामक चित्र बनाये जिसमें तांत्रिक रंगों का संयोजन मात्र है। इसमें बिंब छुप जाता है और प्रतिबिंब रह जाता है इनकी कला काल्पनिक आकाशीय सोच की तरह हैं।

Date 1/9/2023

Unit - III

Q. रामगोपाल विजयवर्गीय की चित्रकला की समीक्षा लिखिए।

Ans. R.V. इनका जन्म 1905 में राजस्थान में सवाई माधोपुर जिले में बालेर नामक ग्राम में वर्गीयों परिवार में हुआ था। इन्होंने प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट में अध्ययन किया। ई उस समय असीत कुमार हल्दर प्राचार्य थे। जो बंगाल स्कूल के कलाकार थे जिससे प्रभावित होकर शान्ति निकेतन से पोस्ट डिप्लोमा किया।

1928 ई॰ में फाईन आर्ट एण्ड क्राफ्ट सोसाइटी कलकत्ता में में चित्र प्रदर्शनी लगाई साथ ही इन्हें लिखने का भी शौक था, जिसमें साहित्यक पत्रिकाओं में मार्डन रिव्यू, विशाल भारत, एवं धर्म युग, प्लेटों मुख्य हैं।

1945 से 1966 के मध्य राजस्थान कला मन्दिर तथा राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट के प्रिंसिपल रहे।

1958 से 1960 के मध्य राजस्थान ललित कला अकादमी के अध्यक्ष रहे।
1945 ई.वी. में मेघदूत चित्रावली चित्रित की। जो लघुचित्र शैली में चित्रित है।
1934 ई.वी. में त्रिय-वर्गीय चित्र एलबम तैयार किया।
1945 ई.वी. में बिहारी चित्रावली चित्रित की। 1952 ई.वी. राजस्थान में पेंटिंग पुस्तक किताब लिखी। 1988 में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा मोनोग्राम प्रकाशित हुआ। 1990 में रूपकार एवं रवाब्ज पेंटिंग चित्रित की। जो 1995 में पूर्ण हुई।

Ram Gopal Vijavargya को प्राप्त पुरस्कार

1. 1934 ई.वी. में महाराजा पटीयाला पुरस्कार प्राप्त किया।
2. 1958 ई.वी में राजस्थान ललित कला अकादमी का पुरस्कार मिला।
3. 1984 मे भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से पुरस्कृत किया गया ~~1988~~
4. 1988 दिल्ली ललित कला अकादमी

द्वारा भेंट किया गया।

1998 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग में साहित्य वाचस्पति सम्मान दिया गया।

विजयवर्गीय द्वारा लिखित पुस्तकें :-

1. राजस्थानी चित्रकला (1952, 1953)
2. 1969 में कल्पना आधारित मेहन्दी लगे हाथ और काजल भरी आंखे पुस्तक लिखी।
3. बसन्ती 1998 में
4. मध्यम मार्ग 1998 मे
5. ~~निशब्द~~ निशर्ग मंजरी नामक कविता 2003 में रचित की। और इसको लिखते हुए ही जयपुर स्थित निवास पर उनकी मृत्यु हो गई।